विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

खान-पान की बदलती आदतें

पिछले कुछ बरसों में भारतीयों के खान-पान की रुचियों, प्राथमिकताओं और तौर-तरीकों में भारी बदलाव देखे गए हैं। एक समय था जब खान-पान के मामले में भारतीयों की रुचियां बहुत सीमित थीं, घर से बाहर खाना बुरा समझा जाता था, यात्रा वगैरह में भी लोग घर के बने खाने पर ही निर्भर रहना पसंद करते थे, सामान्य ही नहीं औत्सविक खाने में भी ज़्यादा वैविध्य देखने को नहीं मिलता था, और ज़्यादातर लोग खाने के मामले में प्रयोगशील होने की बजाय परंपरा से जुड़े रहना पसंद करते थे। शादी जैसे अवसरों पर भी न तो मिठाई में अधिक वैविध्य होता था न रोटी सब्ज़ी में। लोग सीमित में सुखी थे। लेकिन इधर यह सारा परिदृश्य बहुत तेज़ी से बदला है।

अब हमारे भोजन की रुचियां बहुत ज़्यादा बदल गई हैं और बहुत मज़े की बात यह कि वे जितनी अधिक वैश्विक हैं, उतनी ही तेज़ी से उनमें क्षेत्रीय और स्थानीय रंग भी घुलते जा रहे हैं। मतलब यह कि हम एक साथ ग्लोबल और लोकल दोनों हो रहे हैं। इसी तरह एक विरोधाभास यह है कि एक तरफ तो खाने और सेहत के पारस्परिक रिश्तों को लेकर हम बहुत ज़्यादा जागरूक होते जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ फास्ट फूड का चलन बहुत तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। सेहत की फ़िक्र के बावज़ूद उसे हानि पहुंचाने वाली चीज़ों का पहले से कहीं ज़्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसा ही एक विरोधाभास यह भी है कि जहां स्वास्थ्य विषयक कारणों से शाकाहार और वीगन भोजन का चलन बढ़ा है वहीं दूसरी तरफ स्वास्थ्य विषयक कारणों से (भी) अंडों और मांसाहार का उपयोग भी पहले से ज़्यादा होने लगा है।

इन सारे बदलावों के मूल में दो-तीन बड़ी बातें हैं। एक बात तो यह कि समाज में एक वर्ग ऐसा उभरा है जो अपने खान-पान पर न केवल पहले से कहीं ज़्यादा खर्च करने में समर्थ है और ऐसा करने के लिए तत्पर है, अपनी शिक्षा-दीक्षा और तकनीक के फैलाव से उत्पन्न प्रभावों के कारण वह शेष विश्व की खान-पान विषयक गतिविधियों, रुझानों और फैशनों से भी परिचित है और उनका अनुकरण करने में खुशी का अनुभव करता है। सामान्य मध्यमवर्गीय भारतीय भी आज दुनिया भर के व्यंजनों के बारे में न केवल जानता है वह उनको चखने और अपने दैनंदिन भोजन में शामिल करने में प्रसन्नता का अनुभव करता है।

इधर भारतीयों में पति-पत्नी दोनों के काम करने की प्रवृत्ति के विस्तार और काम के घण्टों मंय बढ़ोतरी का एक परिणाम यह भी हुआ है कि घर से बाहर का खाना केवल शौक न रहकर मज़बूरी भी बन गया है। पति पत्नी दोनों अगर दफ्तर में अत्यधिक व्यस्त रहकर रात नौ-दस बजे घर लौटें तो उनके लिए घर पर खाना बनाना बहुत कठिन होता है। तब या तो वे दो मिनिट में तैयार हो जाने वाली मैगी, ब्रेड या रेडी टू ईट फूड से अपना पेट भरते हैं या फिर बाहर से खाना मंगवा कर अपनी क्षुधा शांत करते हैं। यह आकस्मिक नहीं है कि शहरों में ही नहीं छोटे कस्बों तक में स्विगी और ज़ोमैटो जैसी सेवाएं बहुत तेज़ी से लोकप्रिय होती जा रही हैं। ये केवल विलासिता न रहकर कामकाज़ी युगल के लिए जीवन रेखा बन कर उभरी हैं। इन सेवाओं का चौबीसों घण्टे उपलब्ध रहना बहुतों के लिए बहुत बड़ी नेमत है।

भारतीय खाद्य सामठाी और इससे जुड़ी अन्यान्य गतिविधियों के बाज़ार में बहुत तेज़ी से विस्तार हुआ है। बाज़ार नई-नई चीज़ों से भरा है, विज्ञापन उनके प्रयोग के लिए आकर्षित करते हैं और तकनीक के इस्तेमाल तथा पहले से कहीं अधिक होने वाली देशी-विदेशी यात्राओं की वजह से हासिल एक्सपोज़र के कारण लोग उन सबका प्रयोग करने के लिए उत्सुक हो उठे हैं। हर शहर में नए-नए रेस्तरां खुलते जा रहे हैं और वे पाक विधियों को लेकर प्रयोग करने में भी पीछे नहीं हैं। न केवल क्षेत्रीय, देशी और विदेशी पकवान अब पहले की तुलना में अधिक सहजता से सुलभ होने लगे हैं, बहुत सारे लुप्त प्रायः क्षेत्रीय व्यंजन फिर से चलन में आए हैं और उनकी स्वीकार्यता बढ़ी है। पंजाब का छोला भटूरा, राजस्थान की दाल-बाटी और दक्षिण के इडली डोसा अब आंचलिक व्यंजन न रहकर राष्ट्रीय व्यंजन बन चुके हैं। चीनी, थाई, मेक्सिकन, इटैलियन, जापानी आदि व्यंजनों को हम ऐसे अपना चुके हैं जैसे वे हमारे अपने ही हों। पाक कला में खूब सारे प्रयोग भी हो रहे हैं, भले ही उनमें से बहुत सारे प्रयोग हमें अटपटे लगें। फ्यूज़न फूड के साथ-साथ विभिन्न तकनीकों से आकर्षक बनाए पकवान अब अजूबा नहीं रह गए हैं।

वह पीढ़ी अब लुप्त प्रायः है जो किसी शादी में जाकर चालीस पूड़ियां और पचास गुलाब जामुन बहुत आसानी से उदरस्थ कर लेती थी। इसकी बजाय अब यह देखने को मिलता है कि लोग विवाह आदि में भी केवल सलाद खाकर या बिना चुपड़ी चपाती खाकर सुख का अनुभव करते हैं।

यह बात बहुत रोचक लग सकती है कि भारतीय समाज में एक तरफ तो फास्ट फूड का चलन बहुत तेज़ी से बढ़ा है, और ख़ास तौर पर युवा पीढ़ी उसके मोह में बहुत गहरे डूबी है, इसी भारतीय समाज में अपनी सेहत को लेकर चिंता भी गम्भीर हुई है। सजग लोग वसा, शर्करा और नमक आदि से परहेज़ करने लगे हैं, कैलोरी की गणना करने लगे हैं, खाने में संयम बरतने लगे हैं। वह पीढ़ी अब लुप्त प्राय: है जो किसी शादी में जाकर चालीस पूड़ियां और पचास गुलाब जामुन बहुत आसानी से उदरस्थ कर लेती थी। इसकी बजाय अब यह देखने को मिलता है कि लोग विवाह आदि में भी केवल सलाद खाकर या बिना चुपड़ी चपाती खाकर सुख का अनुभव करते हैं। इधर संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर मोटे अनाज़ (मिलेट्स) के उपयोग को भी खूब संबल मिला है। लोग अपनी खान-पान की आदतों में बदलाव करने को लेकर पहले जितने संकोची नहीं रह गए हैं। ऑर्गेनिक फूड का चलन भी खूब बढ़ा है। लोग इन बातों पर भी गहरा विचार करने लगे हैं कि कौन-सा तेल, कौन-सा चावल, कौन-सा आटा वगैरह खाना उनकी सेहत के लिए लाभप्रद या हानिप्रद है।

भारतीय समाज, विशेष रूप से उत्तर भारतीय समाज मुख्यत: शाकाहारी है। मांसाहार के प्रति उसमें नापसंदगी का भाव विद्यमान रहा है जो कई तरह से अभिव्यक्त भी होता रहा है। मेरा तो यह स्पष्ट मानना है कि खान-पान व्यक्तिगत रुचि का मामला है और उसमें अच्छा या बुरा, सही या ग़लत कुछ भी नहीं होता है। लेकिन इधर यह स्थिति भी बदलती जा रही है। लोग स्वास्थ्य विषयक सोच की वजह से, और इस वजह से भी कि वे स्वाद आदि की वजह से इस तरफ आकर्षित हो रहे हैं, अंडे और मांस खाने में वैसे संकोची नहीं रह गए हैं, जैसे वे पहले हुआ करते थे। इसे काफी हद तक सामाजिक स्वीकृति या कम से कम अनदेखी करने का लाभ भी मिलने लगा है। इसमें भी बहुत बड़ी भूमिका लोगों के बाहर जाने और अपनी परिधि से बाहर की दुनिया देखने की है। और बात केवल उन चीज़ों को खाने की ही नहीं है जिनको खाना निकट अतीत में बुरा माना जाता था, पेय पदार्थों के मामले में भी कमोबेश यही स्थिति है। एक समय वह भी था जब चाय तक पीना बुरा माना जाता था। पुरानी पीढ़ी के लोग तो आज भी गर्व से यह कहते हैं कि मैं तो चाय तक नहीं पीता। आज विभिन्न पेय पदार्थों (संकेत समझा जाए!) को लेकर भी एक खुलेपन का भाव नज़र आता है। परम सात्विक रुचि वाले परिवारों में भी पेय पदार्थों के उपयोग को लेकर वर्जनाएं टूटी हैं। जहां नहीं टूटी हैं वहां भी ये शिथिल तो हुई ही हैं। अब लोग इस बात की कम परवाह करते हैं कि कोई किसी पेय पदार्थ का उपयोग करताहै ! जिन परिवारों में इस तरह के पदार्थों का उपयोग कल्पनातीत था, उनमें भी इन ने अपनी जगह बना ली है।

भारतीय समाज में जो सबसे बड़ा स्वागत योग्य परिवर्तन देखने में आ रहा है वह है धूम्रपान को लेकर। सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान लगभग समाप्त हो चुका है। वह समय बहुत पीछे का नहीं है जब रेलों में, बसों में, रेल्वे स्टेशनों पर, बस अड्डों पर, यहां तक कि शिक्षण संस्थाओं के आस-पास भी लोग खुले आम धूम्रपान करते थे। अब वह बीते ज़माने की बात है। अब अगर कोई धूम्रपान करता भी है तो या तो वह ख़ुद ही अलग जाकर करता है या फिर उसे निस्संकोच टोक दिया जाता है। इस बात का स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन इसी के साथ यह भी कि धूम्रपान भले ही विरल हो गया है, गुटखा आदि का चलन नहीं घटा है। यह भी कम दुखद नहीं है कि बड़े-बड़े सितारे भी उनका प्रचार करने में नहीं झिझकते हैं।

खान-पान की इन बदलती आदतों ने हमारी छवि को तो बेहतर बनाया ही है, इनसे देश की अर्थ व्यवस्था को भी बड़ा संबल मिला है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

खजूर के बागों में ''रेड प्लाम विविल'' कीट फैलने से किसान चिंतित

बागों में लगे बड़े-बड़े खजूर पेड़ों को ये कीट कुछ ही दिनों में चट कर जाते हैं

हनुमानगढ़, (निसं)। बीते सालों में जिले के खजूर बागों में मीठे फल खूब लगते रहे हैं। इस बीच कुछ दिन पहले जिला मुख्यालय के नजदीक स्थित एक बाग में ''रेड प्लाम विविल'' कीट के फैलने से किसानों के होश उड़ गए हैं। बागे में लगे हाथी जैसे खजूर पेड़ों को उक्त कीट कुछ ही दिनों में चट कर जाते हैं।

संभावित नुकसान को देखते हुए सभी खजूर उत्पादक किसानों को विभाग की ओर से सतर्क कर दिया गया है। फिलहाल बीकानेर से आई टीम ने एक बार खजूर के पौधों का उपचार कर किसानों को राहत दी है। साथ ही हर पौधे का हर दिन निरीक्षण करके इसकी देखभाल करने की सलाह दी है। ताकि कीट का असर दोबारा नजर आने पर तत्काल उसे नियंत्रित किया जा सके।

हनुमानगढ़ जिले में बागों में खजूर के पेड़।

- बीकानेर से आई टीम ने खजूर के पौधों का उपचार कर राहत दी

जानकारी के अनुसार जिले में करीब आठ सौ बीघे में खजूर बाग लगे हैं। खजूर का पौधा बहुत कठोर जलवायु, कीट/ रोग रहित तथा कम गुणवत्ता की भूमि/ पानी में पनपने वाला होता है।

लेकिन खजूर में एक कीड़ा रेड प्लाम विविल तबाही मचा रहा है। जहां भी यह कीट फैलता है, वहां हाथी और चिंटी की कहानी को बयां करता है। यह कीट खजूर जैसे बड़े पेड़ को भी कुछ ही दिनों में चट कर जाता है और पेड़ धराशायी होकर गिर जाता है। इसी तरह का प्रकोप जिले में सतीपुरा के पास 49 एनजीसी में देखा गया है। इस बाग में करीब तीस प्रतिशत तक पौधों को नुकसान पहुंचने की बात अधिकारी कह रहे हैं। कृषि विभाग व उद्यान विभाग के अफसरों की माने तो उक्त कीट गुजरात व महाराष्ट्र में देखा जाता रहा है। इस बार राजस्थान के कुछ हिस्सों में इसका प्रकोप नजर आया है। लेकिन प्रारंभिक अवस्था में ही इसकी पहचान होने पर इसका नियंत्रण कर रहे हैं। ताकि खजूर बागों को अधिक नुकसान नहीं पहुंचे।

जिले में जिस तरह से अधिकतम तापमान में बढ़ोतरी हो रही है, उसे देखते हुए खजूर की खेती सुरक्षित मानी जाती है। इस पर बरसात व तेज तापमान का ज्यादा असर नहीं होता है। रोग व कीड़े भी इसमें ज्यादा नहीं लगते। एक हैक्टेयर में कुल 156 पौधे लगते हैं। इसमें 148 मादा व आठ पौधे नर के लगते हैं। जिले में प्रति पौधा 80 किलो से 160 किलो तक उत्पादन हो रहा है। औसतन पचास से साठ रुपए प्रति किलो भाव रहते हैं। इस वक्त खजूर के पेड़ों पर फूल खिल गए हैं।

अगस्त तक फल तैयार होकर बाजार में आएंगे। गत बरसों में बंग्लादेश भी खजूर गया था।

दक्षिण के राज्यों में इसकी खूब मांग रहती है। कोरोना काल गुजरने के बाद अब यूरोपियन व खाड़ी देशों में खजूर की सप्लाई होने की उम्मीद है। थोक में करीब 70 रुपए प्रति किलो तक किसानों को इसके रेट मिल रहे हैं। जिले में लाल व पीले रंग के खजूर की खेती हो रही है।

बरही व खुलेजी किस्म के खजूर की खेती के लिए हनुमानगढ़ की आबोहवा को कृषि अधिकारी बेहद अनुकूल मान रहे हैं।

बीआर बाकोलिया, सहायक निदेशक, कृषि विभाग हनुमानगढ़ का कहना है कि जिले में खजूर की अच्छी खेती हो रही है। इस बार जिला मुख्यालय के नजदीक एक बाग में रेड प्लाम विविल कीट का प्रकोप देखा गया है। विभागीय टीम ने बाग का निरीक्षण करके पौधों को उपचारित कर दिया है। खजूर उत्पादक किसानों को सतर्क कर दिया गया है।

हेला ख्याल संगीत दंगल में गायक मंडलियों ने राजनीतिक कटाक्ष किये

लालसोट, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित जवाहरगंज सर्किल पर विश्व विख्यात हेला ख्याल संगीत दंगल में इस बार गायक मंडलियों ने देश-विदेश सहित स्थानीय स्तर पर हुई राजनीतिक उथल-पुथल सहित चल रहे चुनाव एवं सामाजिक व्यवस्थाओं में आई विकृतियों को खुद के शब्दों में पिरोकर बेहद शाही अंदाज में पेशकर वाहवाही लूटी। विश्व प्रसिद्ध 274 वां हेला ख्याल संगीत दंगल का रविवार सुबह विधिवत समापन हुआ। हेला ख्याल संगीत दंगल में करीब एक दर्जन गायक मंडलियों ने परंपरागत पौराणिक वाद्य यंत्रों के साथ अपनी गायकी के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इस बार लोकसभा चुनाव होने के चलते गायक मंडलियों ने राजनीतिक व्यंग्य भी छोड़े एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के कथनी करने के अंतर को बताते हुए श्रोताओं के समक्ष खुद की प्रस्तुतियों को बेबाक तरीके से रखा।

इस बार हेला ख्याल संगीत दंगल में गणेश मंडल लालसोट, देवनारायण मंडल सीतोड, शिव मंडल लालसोट लक्ष्मीनाथ मंडल लालसोट, हेला ख्याल मंडल रानीला, सैनी मंडल लालसोट, शर्मा मंडल रानीला, महाकाली मंडल लालसोट, चतुर्वेदी मंडल सायपुर, पारख मंडल लालसोट, बरनाला की गायक मंडली ने भाग लिया। वहीं गायक मंडलों ने देश में राजनीतिक, धार्मिक सहित कई बड़े घटनाक्रम व मुद्दों को लेकर पक्ष-विपक्ष पर कटाक्ष किए। वहीं हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे। हेला ख्याल संगीत दंगल के समापन पर सभी गायक मंडलियों को प्रशस्ति पत्र देकर व साफा पहनाकर सम्मानित भी किया गया।

लालसोट में हेला ख्याल संगीत दंगल में हजारों की तादात में जन समुदाय मौजूद रहा।

हेला ख्याल संगीत दंगल को लेकर गुरुवार को गणगौर की लालसोट में शाही सवारी निकाल गई। वहीं शुक्रवार को बूढी गणगौर की लालसोट शहर में शाही लवाजमे के साथ सवारी निकाली गई। वहीं गणगौर माता की प्रतिमा को जवाहर गंज सर्किल पर विराजमान करके उसके बाद से ही जवाहरगंज सर्किल पर विश्व प्रसिद्ध हेला ख्याल संगीत दंगल का आयोजन शुरू हो हुआ जो रविवार सुबह तक 36 घंटे तक यह हेला ख्याल संगीत दंगल जारी रहा। वहीं लालसोट में विश्व की गौरवशाली ऐतिहासिक परंपरा रही है। जिसमें हेला ख्याल संगीत दंगल को अलग पहचान मिली है। इस आयोजन में गायक मंडलीय वाद्य यंत्रों के साथ विभिन्न रचनाओं की अपनी गायकी के माध्यम से प्रस्तुतियां देती है। वहीं आसपास के जिलों से हजारों लोग इस संगीत दंगल को सुनने के लिए आते हैं। उनके लिए यहां पर टेंट, पानी सहित माकूल व्यवस्थाएं की जाती है।

विधायक रामबिलास मीणा ने कहा कि लालसोट की गौरवशाली परंपरा हेला ख्याल संगीत दंगल का आयोजन हुआ। जिसमें गायक मंडलियों ने रचनाओं की प्रस्तुतियां दीं। वहीं संगीत दंगल को सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो गए। यह परंपरा 274 साल से लगातार चली आ रही है जो कि विश्व में ऐसी कहीं भी परंपरा नहीं है इसमें सभी समाज के लोग एक साथ बैठते हैं और इस आयोजन का आनंद लेते हैं। हेला ख्याल संगीत दंगल में पहुंचे बांदीकुई विधायक भागचंद टांकड़ा ने कहा कि मैं अब तक इस कार्यक्रम के बारे में सुना ही था कभी देखा नहीं था। आज पहली बार इस कार्यक्रम को देखने के लिए आया हूं और मैं तो यह चाहता हूं यह 274वां हेला ख्याल संगीत दंगल 2740 वर्ष से भी अधिक समय तक चलता रहे। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से ही सामाजिक समरसता बढ़ती है।

- विश्व प्रसिद्ध 274 वां हेला ख्याल संगीत दंगल का विधिवत समापन हुआ
- हेला ख्याल संगीत दंगल में करीब एक दर्जन गायक मंडलियों ने रचनायें पेश की
- गायक मंडलियों को प्रशस्ति पत्र देकर व साफा पहनाकर सम्मानित किया

प्रदेश में सरकारी स्कूलों में अध्यापकों करीब डेढ़ लाख पद रिक्त

बीकानेर, (निसं)। सरकारी स्कूलों की रीढ़ कहे जाने वाले अध्यापकों के प्रदेश में करीब डेढ़ लाख पद रिक्त पड़े हैं। इसके कारण बेरोजगार विद्यार्थी अपने भविष्य निर्माण को लेकर बाट जोह रहे हैं। प्रदेश के विद्यालयों में प्रधानाचार्य से लेकर तृतीय श्रेणी के शिक्षकों के पद रिक्त होने से विद्यालयों की व्यवस्थाएं चरमरा रही है। कई उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बिना व्याख्याता और वरिष्ठ अध्यापकों के विद्यार्थी लगातार दो सत्र से परीक्षाएं दे रहे हैं।

शिक्षा विभाग के अनुसार श्रीगंगानगर-अनूपगढ़ जिले में प्रधानाचार्य, उप-प्राचार्य, व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापक व अध्यापक सहित अन्य पद लंबे समय से रिक्त चल रहे हैं। इसका प्रभाव शिक्षण कार्य पर पड़ रहा है। हालांकि तृतीय श्रेणी सहित कुछ शिक्षकों की चुनाव से पहले नियुक्तियां हुई थी। सरकार ने 2009-10 से आरटीई लागू करने के बाद भी इसके प्रावधान के अनुरूप रिक्त पदों को भरा नहीं जा रहा है और न ही अधिनियमों की पालना में पद सृजित किए जा रहे हैं। बेरोजगारी ग्राफ लगातार बढ़ रहा है। इसी तरह सरकारी विद्यालयों में वर्ष दर वर्ष नामांकन भी बढ़ रहा है, लेकिन भर्तियां आती भी हैं, तो ऊंट के मुंह में जीरे की कहावत को चरितार्थ करती है। प्रशिक्षित बेरोजगार दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं।

दर्शन कंबोज, शिक्षक नेता, प्राथमिक माध्यमिक शिक्षक संघ, श्रीगंगानगर ने बताया कि सभी संवर्गों में विभागीय पदोन्नति और सीधी भर्ती से रिक्त शैक्षणिक पदों को अविलम्ब भरना चाहिए। अभिभावकों और विद्यार्थियों में सरकारी विद्यालयों के प्रति जो रूझान बना है, वह दीर्घकालीन बना रह सके। पद भरे होने से नामांकन में वृद्धि होगी।

चेतन प्रकाश सैनी, उपाध्यक्ष, राज. विशेष शिक्षक संघ, श्रीगंगानगर ने बताया कि शिक्षा विभाग में समय पर पदोन्नतियां नहीं होने से विद्यालयों में विशेषकर व्याख्याता और वरिष्ठ अध्यापकों के पद रिक्त हैं। इससे न केवल शैक्षणिक कार्य बाधित हो रहे हैं। बल्कि परीक्षा परिणाम भी गुणात्मक दृष्टि से प्रभावित हो रहे हैं।

पन्नालाल कड़ेला, सीडीइओ, शिक्षा विभाग, श्रीगंगानगर का कहना है कि वर्तमान में लोकसभा का चुनाव चल रहा है और आचार संहिता लगी हुई है। इस कारण शिक्षा विभाग में रिक्त पड़े पदों पर पदोन्नतियां व विद्यालयों में खाली पदों पर नियुक्तियां नहीं की जा रही है। चुनाव के बाद ही निदेशालय स्तर पर इसको लेकर विभाग कार्रवाई करेगा।

- प्रधानाचार्य से लेकर तृतीय श्रेणी के शिक्षकों के पद रिक्त होने से व्यवस्थाएं चरमरा रही है
- कई उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बिना व्याख्याता और वरिष्ठ अध्यापकों के विद्यार्थी लगातार दो सत्र से परीक्षाएं दे रहे हैं

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 15 अप्रेल, 2024

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 3:05 तक, सुकर्मा योग रात्रि 11:08 तक, वणिज करण दिन 12:12 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:39 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 3:05 से सूर्योदय तक है। भद्रा दिन 11:12 से रात्रि 12:48 तक रहेगी। आज से दुर्गा पूजा आरम्भ (बंगाल में), जैन ओली आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:42 तक, शुभ 9:17 से 10:52 तक, चर 2:02 से 3:37 तक, लाभ-अमृत 3:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:47

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बन रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कर्क

व्यक्तिगत प्रयासों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। पारिवारिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

सिंह

आर्थिक वित्तिय मामलों में संतुलन बन रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

धनु

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।